वार्तालाप-516, कलकत्ता-1, दिनांक 15.02.08
Disc.CD No.516, dated 15.02.08 at Calcutta-1

समयः 00.01-03.55

जिज्ञासुः बाबा, लौकिक और पारलौकिक बाप से वर्सा मिलता है। तो अलौकिक बाप से वर्सा नहीं मिलता है? अलौकिक बाप ही तो पहले-पहले नर से नारायण बनता है ना।

बाबाः अलौकिक माना जो इस लोक का नहीं है। लौकिक होगा तो इस लोक में उसका शरीर होगा या नहीं होगा? होगा और अलौकिक होगा तो इस लोक का शरीर नहीं होगा। इस साकार शरीर में भी रहते आत्मा कभी अलौकिक बन सकती है या नहीं? बन सकती हैं। इस लोक की कोई भी लोकलाज याद न रहे। इस लोक का जैसे भान ही ना रहे। इस लोक के देह और देह के संबंधियों का भान स्मृति में ही न आये तो हो गया अलौकिक। और जब देहभान में है तो कहेंगे प्रजापिता। इसलिए प्रजापिता को पतित कहेंगे या पावन कहेंगे? पतित। और शंकर को? शंकर को तो कोई भी पतित नहीं कहेगा। वो तो फरिश्ता है। परंतु शंकर से वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा किससे मिलता है?

जिज्ञासु – प्रजापिता से।

Time: 00.01-03.55
Student: Baba, we receive inheritance from the *loukik* (worldly) and *paarlokik* (other worldly) Father. So, don't we receive inheritance from the *alokik* Father? It is the *alokik* father who first becomes Narayan from a man , doesn't he?
Baba: *Alokik* means he who does not belong to this world (*lok*); if he is *lokik*, then will his body exist in this world or not? It will. And if he is *alokik*, have a body of this world. Can the soul become *alokik* even while being in this body or not? It can become. You should not remember any worldly honour (*loklaaj*) of this world. There should not be any consciousness of this world at all/ As if there is no consciousness of this world at all. If the consciousness of the body and relatives of the body of this world doesn't come, then he is *alokik*. And when he is in body consciousness, he will be called Prajapita. This is why will Prajapita be called sinful or pure? He will be called sinful. And what about Shankar? Nobody will call Shankar sinful. He is an angel. But we do not receive inheritance from Shankar. From whom do we receive the inheritance?
Student: From Prajapita.

बाबा - न प्रजापिता से मिलता है। पारलौकिक बाप से वर्सा मिलता है। परंतु पारलौकिक बाप बिंदी बन के वर्सा नहीं देता है। साकार पतित तन में आ करके वर्सा देता है। तो वर्सा या तो लौकिक बाप से मिलता है या।

जिज्ञासु – पारलौकिक बाप से।

बाबा – और?

जिज्ञासु – बाबा इसलिए बोला है कि बाप वर्सा दे या न दे तुमको ड़ाड़े का वर्सा मिलना है।

बाबा – ड़ाड़े का मतलब है बाप का बाप। हमारा बेहद का बाप कौन है?

जिज्ञासु – शिवबाबा ।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: It is not received from Prajapita either. The inheritance is received from the *Paarlokik* Father. But the *Paarlokik* Father does not give inheritance in the form of a point. He gives inheritance by coming in a sinful corporeal body. So, the inheritance is received either from the lokik father or from….
Student: From the *Paarlokik* Father.
Baba: Anything else?
Student: Baba, this is why it has been said: whether the Father gives inheritance or not, you have to receive inheritance from grandfather (*Daadey*).
Baba: *Daadey* means father's father. Who is our unlimited father?
Student: Shivbaba.

बाबा - शिवबाबा बेहद का बाप? हमारा बेहद का बाप दो हैं एक आत्माओं का बाप, एक मनुष्य सृष्टि का बाप। जो मनुष्य सृष्टि का बाप है वो 21 जन्म का वर्सा देने वाला नहीं है। क्या? देता है क्या? वो 21 जन्म का वर्सा नहीं देता। जो बेहद का आत्माओं का बाप है वो 21 जन्म का अविनाशी वर्सा देता हैं और जो मनुष्यों का बाप है वो द्वापर में भी जो भी धर्म स्थापन होते हैं उन धर्मों में जो भी राजाईयाँ, राजधानी स्थापन हुई हैं। उन राजधानियों में सिक्का जमाने का काम उस बेहद के लौकिक बाप का है। पंरतु वो विनाशी वर्सा है। 21 जन्म की सुख-शांति का अविनाशी वर्सा नहीं कहेंगे।
Baba: Is Shivbaba the unlimited Father? We have two unlimited fathers: one is a father of the souls; another one is the father of the human world. The Father of the human world is not the one who gives the inheritance of 21 births. What? What does he give? He does not give the inheritance of 21 births. The unlimited Father of the souls gives the imperishable inheritance of 21 births. And the task of establishing kingship in the religions that were established in the Copper Age belongs to the father of the human beings, the *lokik* father in an unlimited sense. But that is a perishable inheritance. It will not be called an imperishable inheritance of happiness and peace for 21 births.

समयः 03.57-07.11
जिज्ञासुः बाबा, बोला बापदादा साथी बन जायेंगे और।....
बाबाः बाप, दादा, दोनों।
जिज्ञासुः साथी बन जायेंगे।
बाबा – और शिवबाप?
जिज्ञासु – साक्षी बन जायेंगे।
बाबाः- शिवबाप तो साक्षी बनेगा ही। शिवबाप माना ही बिंदी। बिंदु-2 आत्माओं का बाप साक्षी होके परमधाम (में) पाँच हजार साल बैठता है। सिर्फ संगम में आता है। और राम–कृष्ण की आत्मायें?
जिज्ञासु - हम लोंगो के साथी बन जायेंगे।
बाबा – साथी बनकर के रहेंगे।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 03.57-07.11
Student: Baba, it has been said that Bapdada will become companion (*saathi*)…..
Baba: Both Bap and Dada.
Student: They will become companion.
Baba: And what about the Father Shiv?
Student: He will become a detached observer (*saakshi*).
Baba: The Father Shiv will anyway become *saakshi*. The Father Shiv means a point. The Father of point like souls sits in the Supreme Abode for five thousand years like a detached observer. He comes only in the Confluence Age and the souls of Ram and Krishna? ...
Student: They will become our companions.
Baba: They will stay as our companions.

जिज्ञासु – तो 2036 के पहले?

बाबा – यहाँ नहीं साथी बन के रहेंगे? अभी भी साथी नहीं हैं? अभी भी साथी हैं।

जिज्ञासु – लेकिन अब बाप साथ नहीं हैं?

बाबा – दादा नहीं हैं उसमें प्रवेश?

जिज्ञासु – हैं। तीन बाप दो बापदादा और एक बाप शिव। तीन हो गया।

बाबा – तो। एक तो साक्षी है हमेशा। और एक जो बाप है मनुष्य सृष्टि का वो अभी भी साथी है और आगे भी साथी बनकर के रहेगा। और?

जिज्ञासु – सदा कायम मतलब शिवबाबा रहेगा।

बाबा – इस सृष्टि पर सदा कायम एक शिवबाबा ही है, शिवबाप सदा कायम नहीं है। जो सदा कायम है वो निराकार और साकार का मेल है। निराकार आत्मा होती है और साकार शरीर होता हैं। 21 जन्म में भी वो शरीरधारी मौजूद होगा और 63 जन्मों में भी वो शरीरधारी मौजूद होगा। वो है ही ऑलराउन्ड पार्टधारी। इसलिए बोला क्या? सदा का साथी।

Student: So, will it be before 2036?
Baba: Will they not be our companions (*saathi*) here? Are they not our companions now? They are companions even now.
Student: But is the Father not with us now?
Baba: Has Dada not entered him?
Student: He /has. There are three fathers. Two are Bap and Dada and one is the Father Shiv. They are three.
Baba: So, One is always a *saakshi* (detached observer). And the Father of the human world is still our companion and he will remain our companion in future as well. Anything else?
Student: Does *sadaakayam* (always present) mean that Shivbaba will remain [with us].
Baba: Only one Shivbaba is always present in this world; the Father Shiv is not present always (in this world). The one who is always present is a combination of the incorporeal and the corporeal. The soul is incorporeal and the body is corporeal. That bodily being will be present for 21 births and that bodily being will be present in 63 births too. He is an all-round actor. This is why, what has been said? Companion forever.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु – बाबा शिवबाप सदा कायम रहता हैं या शिवबाबा का रथ?

बाबा – शिवबाप सदा कायम नहीं रहता। जो शिवबाबा है साकार और उसमें निराकार आत्मा जो बाप समान बनती है। कौनसी आत्मा?

जिज्ञासु – रामवाली आत्मा।

बाबा – भक्तिमार्ग में कह देते है आत्मा सो परमात्मा। क्या सभी आत्मायें सो परमात्मा परम पार्टधारी होती है क्या? परम पार्टधारी माना हीरो पार्टधारी। सभी आत्मायें तो हीरो पार्टधारी नहीं होती। आत्माओं के बीच में सिर्फ एक ही आत्मा है जो बाप समान पार्ट बजाती है। जब बाप समान पार्ट बजाती है तो उसका नाम एक ही देवात्मा है जिसका नाम शिवबाप के साथ के जोड़ा जाता है। और कोई भी देवात्मा नहीं है जिसका नाम बाप के साथ जोड़ा जाता हो।

Student: Baba is the Father Shiv always present or is Shivbaba's chariot present always?

Baba: The Father Shiv does not remain forever (in this world). Shivbaba, the corporeal [body] and the incorporeal soul within it which becomes equal to the Father… Which soul?

Student: The soul of Ram.

Baba: In the path of worship it is said a soul itself is Supreme Soul. Do all the souls become supreme soul, [ie.] are they supreme actors? Supreme actor means hero actor . All the souls are not hero actors. Among the souls there is only one soul which plays a part equal to the Father. When it plays a part equal to the Father he is the only one deity soul whose name is suffixed with the Father Shiv. There is no other deity soul whose name is suffixed with the Father.

समयः 07.12-10.15

जिज्ञासुः बोला बाप से प्यार माना ब्राह्मण परिवार से प्यार। इसका मतलब?

बाबाः कोई एक परिवार है उस परिवार में एक बाप है और 8-10 बच्चे हैं। 8-10 बच्चों का कोई दुश्मन हो और उन बच्चों के बाप को प्यार करे तो क्या ये कहा जायेगा कि वो वास्तव में बाप को प्यार करता है? ऐसे यहाँ भी है बाप है आत्मा और उसके बच्चे भी आत्मा। आत्मिक स्थिति का पुरूषार्थ करने वाले, 84 जन्म लेने वाले। तो कोई ये कहे कि हम तो बाप को प्यार करते हैं। बाप का जो आत्मिक परिवार है, रूहानी परिवार है हमें उसे कोई लेना-देना नहीं है तो देहअभिमानी है या आत्मा है? देहअभिमानी है। सभी कोई अपनी जाति से प्यार करता है। क्या? बंदर भी होते हैं ना। जब दूसरी जाति वाले जानवरों से युद्ध होता है तो सारे बंदर मिलकर के एक हो जाते हैं। हमजिन्स को कोई छोड़ता है क्या? तो ये भी रूहानी परिवार हैं, आत्मा का परिवार हैं, आत्मिक स्टेज में रहने वालों का परिवार है, आत्मा-आत्मा आपस में भाई-भाई का परिवार है। कोई ये कहे कि हमको इन आत्माओं से प्यार नहीं है। सारी मनुष्य सृष्टि की आत्मायें हमारी भाई हैं। परंतु वास्तव में क्या वो भाई हैं या सदाकाल भाई रहेंगे? भाई-भाई के रूप में प्रैक्टिकल पार्ट बजावे तो कहेंगे भाई और पार्ट न बजावे, विपरीत बुद्धि बन जावे, बाप का नाम बदनाम कर देवे तो भाई-भाई किस बात के।

Time: 07.12-10.15

Student: It has been said that love for the Father means love for the Brahmin family. What does it mean?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Suppose there is a family and there is a father in that family and there are 8-10 children. If there is an enemy of those 8-10 children and he loves the father of those children, then will it be said that he actually loves the father? Similar is the case here; the Father is a soul and his children are also souls, the ones who make *purusharth* (spiritual efforts) for the soul conscious stage; those who take 84 births. So, if someone says: I love the Father, I don't have anything to do with the spiritual family of the Father; then is he body conscious or is he a soul? He is body conscious. Everyone loves his own community. What? Monkeys for example, when they fight with animals of other species, all the monkeys unite and become one. Does anyone leave his own type? So, this is also a spiritual family, a family of the soul, a family of those who remain in a soul conscious stage; a family of souls who are brothers among each other. If someone says: I do not love these souls. The souls of the entire human world are our brothers. But actually are they brothers or will they remain brothers forever? If they play a part of brothers in practice, then they will be said to be brothers and if they do not play such a part and if they become the ones with an opposing intellect, if they disgrace the name of the Father, then will they be called brothers?

समयः 10.20-11.56

जिज्ञासुः बाबा, मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर सब चला जायेगा। सिर्फ एक ही बड़ा मन्दिर रह जायेगा। एक बड़ा मन्दिर किसका यादगार? लक्ष्मी-नारायण या शिवबाबा का?

बाबाः एक बड़ा मंदिर वो होता है जिसमें बड़ा बाप ही सब कुछ है। क्या? उस मंदिर में बाप ही बैठा हुआ हैं बाकी सब उसकी चिरोरी करने वाले हैं, सब उसको मानने वाले हैं। शिवबाप शिवालय में होता हैं। आलय माना घर। जो भी पुराने-पुराने मंदिर हैं उन मंदिरों में यादगार बनी हुई हैं बीच में शिवलिंग और आसपास चारों तरफ दीवारों में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ रखी हुई हैं। सब किसको देख रहे हैं? किसका दर्शन करने में लगे हुए हैं? एक बाप को देखते हैं। एक बाप दूसरा, दूसरा न कोई।

Time: 10.20-11.56

Student: Baba, the temples, mosques, churches all will perish. Only one big temple will survive. Whose memorial is that one temple? Is it of Lakshmi-Narayan or of Shivbaba?

Baba: One big temple is that one in which the senior Father is everything. What? Only the Father sits in that temple; all the rest are the ones who praise him; all of them believe in Him. The Father Shiv is in *Shivalay. Aalay* means house. In all the old temples a memorial has been made; there is *Shivling* in the middle and all around it there are idols of deities on the walls. Whom are all of them seeing? Whom are they observing? They see the one Father. One Father and no one else.

समयः 11.58-13.20

जिज्ञासुः बाबा, नेक्स्ट टू गॉड कृष्ण, नेक्स्ट टू गॉड प्रजापिता, नेक्स्ट टू गॉड नारायण। तो संगमयुगी कृष्ण की लीला रहता हैं भक्तिमार्ग में?

बाबाः गीता का भगवान संगमयुगी कृष्ण, संगमयुगी नारायण या सतयुग का कृष्ण या सतयुग का नारायण? संगमयुग में ही ऊँच ते ऊँच पद बनता हैं। संगमयुग को ही पुरूषोत्तम युग कहते हैं। संगमयुग ही वो युग है जिसमें ऊँच ते ऊँच बाप से ऊँच ते ऊँच वर्सा मिलता हैं। सतयुग में

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

पहला पत्ता कृष्ण को जो वर्सा मिलेगा उसको ऊँच ते ऊँच वर्सा नहीं कहेंगे। क्यों? क्योंकि वो वर्सा सुप्रीम सोल बाप से नहीं मिलता डायरेक्ट। किससे मिलता है? भगवान-भगवती का जो टाईटल लेता है उससे मिलता है। एक ओरिजिनल भगवान और एक टाईटलधारी भगवान – प्राप्ति में फर्क होगा कि नहीं होगा? फर्क हो जाता है।

Time: 11.58-13.20

Student: Baba, next to God is Krishna, next to God is Prajapita, and next to God is Narayan. So, is it the story of the Confluence Age Krishna in the path of worship?

Baba: Who is God of the Gita: is it the Confluence Age Krishna, the Confluence Age Narayan or the Golden Age Krishna or the Golden Age Narayan? The highest post is achieved only in the Confluence Age. The Confluence Age is itself called the *Purushottam* Age[1]. The Confluence Age is the age in which the highest on high inheritance is received from the highest on high Father. The inheritance that the first leaf of the Golden Age, i.e. Krishna will receive will not be called the highest inheritance. Why? It is because that inheritance is not received from the Supreme Soul Father directly; through whom does he receive it? He receives it through the ones who get the title of *Bhagwan-Bhagwati* (God-Goddess). One is originally *Bhagwan* (God) and another one is the one who holds the title of *Bhagwaan* ; will there be a difference in the attainments or not? There is a difference.

समयः 13.25-15.40

जिज्ञासुः बाबा, प्रकृति के जो पांच तत्व हैं तो उसका मुखिया, एक वार्ता में सुना, प्रकृति को कहते हैं मुखिया।

बाबाः प्रकृति पाँच तत्वों का संघात को कहा जाता है प्रकृति। जैसे रावण कहा जाता है तो पाँच विकारों के संघात को माया रावण कहा जाता है। माया रावण कोई एक नहीं हैं कितने मुख हैं? पाँच मुख हैं। रावण के दस मुख दिखाये जाते है ना। पाँच विकार, वो पुरुष मुख हैं और पाँच, स्त्री मुख हैं, उनको कहते मंदोदरी के मुख। कैसी उदरी? मंद उदरी। उदर माना पेट। जिसका बुद्धि रूपी पेट मंद है। कैसा मंद है? कि भगवान के साथ लम्बे समय तक रहने के बावजूद भी भगवान को नहीं पहचान पाती। तो मंदबुद्धि कहें या तीक्ष्ण बुद्धि कहे? मंद बुद्धि। उस प्रकृति के पाँच तत्व हैं - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश। उनमें पृथ्वी तत्व मुख्य है। जैसे रावण के पाँच विकारों में काम विकार मुख्य है मुखिया है ।ऐसे पृथ्वी भी मुख्य है। मुखिया है पाँच तत्वों का। और तत्वों में सभी तत्वों की प्रधानता हो या न हो लेकिन पृथ्वी में पाँचों ही तत्व होते हैं।

Time: 13.25-15.40

Student: Baba, there are five elements of nature; I have heard in a discussion (CD) that nature (*prakriti*) is called their head?

Baba: The five elements together constitute nature (*prakriti*) . For example, the combination of five vices is called Ravan, the Maya Ravan. Maya Ravan is not one. How many heads there are? There are five heads. Ravan is shown to have ten heads, isn't he? Five vices have male face and [the rest] five have female face. They are called the faces of *Mandodari*. What kind of *udari* (stomach)? *Mand udari*. *Udar* means stomach; the one whose stomach like intellect is inert (*mand*). It is inert in what way? Despite living with God for a long time, she is unable to recognize God; so, will she be said to have an inert intellect or a sharp intellect? Inert intellect.

[1] Where the highest among the ones who follow the code of conduct is revealed.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

That nature has five elements: earth, water, wind, fire and sky. Among them, the element Earth is the main one. For example, among the five vices of Ravan, the vice of lust is the main one, it is the chief; similarly, Earth is also main. It is the chief of the five elements. There may or may not be the dominance (i.e. presence) of all the elements in other elements, but the Earth contains all the elements.

समयः 17.58-22.23

जिज्ञासुः बाप के साथ अति प्यार रहे। यही है अतीन्द्रिय सुख। प्यार किसको कहा जाता है?

बाबाः लव कहा जाता है जो विनाशी न हो। कैसा हो? अविनाशी हो। वो अविनाशी लव अंत समय का गायन हैं या अभी का गायन है? अभी का गायन नहीं है। अभी तो माया घड़ी-घड़ी हिलाय देती है। अभी-2 बाप के तरफ प्यार पैदा होता है और अभी-अभी माया संशय बुद्धि बनाय देती है। तो लगातर प्यार अभी नहीं रह सकता।

Time: 17.58-22.23

Student: To have extreme love for the Father itself is super sensuous joy. What is meant by love?

Baba: Love is something that is not perishable. What should it be like? It should be imperishable. Is that imperishable love a glory of the last period or about the present period? It is not a glory of the present period. Now Maya shakes us every moment. Just now we develop love towards the Father and just now Maya makes us have a doubting intellect. So, there cannot be continuous love now.

जिज्ञासु – बाप समान बनना ही बाप के साथ प्यार है?

बाबा - बाप है शिव बाप और शिव बाप के साथ लव में सदाकाल के लिए लीन एक हो पाता है। इसलिए उसका गायन है। कौनसा लव? लवलीन तो है लेकिन शास्त्रों में उसका किस रूप में गायन हैं? एकलव्य। एक को लव करने वाला। और कोई को प्यार करने वाला नहीं हैं।

Student: Is becoming equal to the Father having love for the Father?

Baba: The Father is the Father Shiv and only one (person/) is able to merge in the love of the Father Shiv forever. This is why he is praised. Which kind of love? He is immersed in love (*loveleen*), but in which form is he praised in the scriptures? Eklavya. The one who loves only one. He does not love anyone else.

जिज्ञासु - 100% सम्पन्न बनता है एक, बाकी सब थोड़ासा कम होता है। फिर भी बाबा आठ को बाबा के सर पर रखते है। उसको ऊँचा रखते हैं।

बाबा – आठ को जो सर पर रखने वाला है वो शिव के लिए है या शंकर के लिए है?

जिज्ञासु – शंकर के लिए।

बाबा – शंकर के लिए हैं? सर माथे पर चढ़ाने वाली बात जो है वो शिव के लिए लागू होती है या शंकर की आत्मा के लिए लागू होती है? सर माथे पर कौन चढ़ा के रख सकता हैं? एक शिव ही है जो सदैव सर माथे पर चढ़ाकर रखता है। शंकर वाली आत्मा आखरी जन्म में नास्तिक बन जाती है। इसलिए मुरली में बोला हैं भारत इस समय पूरा नास्तिक है।

Student: …….one becomes 100 % complete; and all the rest are slightly lesser [than 100%]. Still Baba keeps the eight on his head; he keeps them high.

Baba: As regards the one who keeps the eight on his head; is it (said) about Shiv or Shankar?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: It is about Shankar.
Baba: Is it about Shankar? As regards placing [the eight] on the forehead; is it applicable to Shiv or to the soul of Shankar? Who can keep someone on his forehead? It is only one Shiv who always keeps them on his forehead. The soul of Shankar becomes atheist in the last birth. This is why it has been said in the Murlis: *Bhaarat* is now completely atheist.

जिज्ञासु – एक सौ परसेन्ट बनता है, वो तो कम होता है तो इसमें एक झूठा होगा और एक सच्चा होगा?
बाबा – नम्बरवार तो है ही। अपना पूरा सच्चा पोतामेल देने वाला कोई कोटो में एक है। इससे क्या साबित हुआ? बाकी अपना पूरा सच्चा पोतामेल नहीं देते और सुप्रीम सोल बाप जो एवरप्योर, एवरटुथ हैं उस सत्य बाप को क्या प्रिय हैं? सच्चाई प्रिय है। सचखंड़ आकर के स्थापन करता है सतयुग। जो दिल को खोलता है और जितना खोलता है बाप ये नहीं देखता कौन कितना पतित हैं, कौन कितना गंदा हैं, कितने अवगुण भरे हुए हैं क्या देखता हैं? सच्चाई देखता है। इसलिए एक सच्चा। उसकी यादगार में कौनसी कथा है? वो सत्यनारायण की कथा सुप्रीम सोल की कथा है या सुप्रीम सोल जिस मुकर्रर रथ में जिसमें प्रवेश करता है उसकी कथा है? मुकर्रर रथधारी की यादगार है। सुप्रीम सोल के लिए नहीं कहेंगे कि वो झूठ की दुनियाँ से मुकाबला करता है। कौन करता है मुकाबला? शरीरधारी को मुकाबला करना पड़ता है। सुप्रीम सोल की ग्लानि और महिमा का कोई मतलब ही नहीं।
Student: One becomes hundred percent. Others are less; among them one becomes false and one is true?
Baba: They are anyway *number wise*. He who gives his completely true *potamail* is one among millions. What does it prove? All others do not give their completely true *potamail* and the Supreme Soul Father who is ever pure, ever truth; what does that true Father like? He likes truthfulness. He comes and establishes the abode of truth, i.e. the Golden Age. He who opens up his heart, and the more he opens it; the Father does not see how sinful someone is; how dirty someone is, how many vices there are in someone; what does He see? He sees truthfulness. This is why one is true; which story is famous in his memorial? Is that story of *Satyanarayana* the story of the Supreme Soul or is it a story of the permanent chariot in which He enters? It is a memorial of the permanent charioteer. It will not be said for the Supreme Soul that He faces the false world. Who confronts it? The bodily being has to confront it. The Supreme Soul does not have any connection with defamation and glory.

समयः 33.11-39.19

जिज्ञासुः बाबा, वसुदेव कृष्ण को टोकरी में भरके ले जाते हैं।
बाबाः वसुदेव को दिखाया है शास्त्रों में कृष्ण भगवान का बाप। क्या? भगवान को जन्म देने वाला। प्रत्यक्षता रूपी जन्म देने वाला बाप दिखाते हैं। जन्म देने वाला माना प्रत्यक्ष करने वाला। वसु कहते है धन-संपत्ति को। वसु माने धन संपत्ति। देव माना देने वाला। तो ज्ञान की धन संपत्ति देने वाला वास्तव में कौन है? शिवबाप। वो शिवबाप जो है वो सर के ऊपर टोकरी रखता है। बुद्धि रूपी टोकरी है। उस बुद्धि रूपी टोकरी में कृष्ण की आत्मा विराजमान है। कौन है वो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बुद्धि रूपी टोकरी? राम वाला व्यक्तित्व। जिस राम वाले व्यक्तित्व में अधूरा चंद्रमा कृष्ण की सोल विराजमान होती है।

Time: 33.11-39.19

Student: Baba, Vasudev carries Krishna in a basket and takes him away.

Baba: Vasudev has been shown in the scriptures as the father of God Krishna. What? The one who gives birth to God. He is shown to be the father who gave the revelation-like birth; the one who gives birth means the one who reveals. Wealth and property are called *vasu*. *Vasu* means wealth and property. *Dev* means giver. So, who is the giver of the wealth and property of knowledge in reality? The Father Shiv. That Father Shiv places the basket on his head; it is a basket-like intellect. The soul of Krishna is seated in that basket-like intellect. Who is that basket-like intellect? The personality of Ram. It is the personality of Ram, in which the incomplete moon, the soul of Krishna, is seated.

और दिखाया हैं काली नदी के बीच में से गुजरता है। कैसी नदी है? गोरी नदी नहीं हैं। गंगा की तरह उसकी देहअभिमान की मिट्टी निर्लिप्त नहीं हैं। गंगा की मिट्टी सारे शरीर पर थोप लो और एक जग पानी ड़ालो सारी बह जायेगी और यमुना की मिट्टी इतनी देहअभिमान की चिपकने वाली मिट्टी है कि थोड़ा भी अगर एक को किसी को चिपक गई थोड़ा भी संग का रंग लग गया तो जल्दी छूटने वाली नहीं हैं। उसको विषय वैतरणी नदी के रूप में दिखाया हैं।

And it has been shown that he passes through the dark river. What kind of a river is it? It is not a white river. Its mud of body consciousness is not non-sticky like Ganga's. Even if you smear the mud of Ganga all over your body and if you put a tumbler of water at one place, the entire mud will flow away. And the mud of body consciousness of Yamuna is so sticky that if even a little of it sticks to someone, if someone is colored by its company even a little, it is not cleaned soon. It has been shown in the form of a river of vices.

कहते हैं यमुना नदी जब दिल्ली में आती है तो सात बड़े-बड़े नाले उसमें गिरते हैं। गंदे-गंदे कचड़ा बहाने वाले नाले। ज्ञान की भाषा में कौन हैं वो सात? जो अधूरे नारायण हैं। जो दृष्टि-वृत्ति का कचड़ा बहाने वाले हैं। जिनको कंस कोस लेता है। क्या? कोस घर में ड़ाल देता है। क्या मतलब? ज्ञान में जन्म लेकर ब्राहमण तो बनते हैं लेकिन कंस उनके साथ क्या सलूक करता है? उनके ब्राह्मणत्व जीवन को मार देता है। व्याभिचारी बनाए देता है। तो दिखाते हैं कृष्ण के सात भाई कोस घर में कंस ने कोस लिये। उनका अस्तित्व समाप्त कर दिया। जो पुरूषार्थ करना चाहिए वो पुरूषार्थ नहीं कर सकते हैं। फिर आठवाँ बच्चा पैदा होता है उसको कंस मार नहीं पाता है। ये प्रैक्टिकल बाते हैं। ऐसे नहीं कि कंस प्रबंध नहीं करता है उसको मारने का, कोस घर में ड़ालने का, प्रबंध तो पूरा करता है। किसी मुरली में ये नहीं आया हैं कि भाईयों को सरेन्डर किया जाए। आया है क्या?

जिज्ञासु – नहीं आया।

It is said that when river Yamuna reaches Delhi, seven big drains join her. They are drains which bring dirty garbage. Who are those seven in the terminology of knowledge? The incomplete Narayans who bring with them the garbage of vision and vibrations, whom Kansa kills; what? He puts them in butcher's house (*kos-ghar*). What does it mean? They do become Brahmins after taking birth in knowledge, but how does Kansa treat them? He kills their Brahmin life. He

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

makes them adulterous. So, it is shown that the seven brothers of Krishna were killed by Kansa in butcher's house. He finished off their existence. They are not able to make the *purusharth* which they should make. Then the eighth child is born. Kansa is not able to kill him. These are practical aspects. It is not as if Kansa does not make arrangements to kill him. He does make complete arrangements to kill him, to put him in a butcher's house. It has not been mentioned in any Murli that Brothers should be allowed to surrender [themselves]. Has it been mentioned?
Student: No, it hasn't been mentioned.

बाबा- कन्याओं-माताओं का तो शरीर ही ऐसा होता हैं। आज की कलियुगी दुनियाँ में उनको संरक्षण की जरूरत हैं। स्त्री जाति बिना पुरूष के संरक्षण के इस दुनियाँ में अपने को सुरक्षित नहीं रख सकती। कोई कहे कि हम स्वतंत्र हो के चौराई पर जिंदगी बितायेंगे। बितायेगी? नहीं बिता सकती। तो कन्याओं-माताओं के लिए तो समर्पण होना ही है। कोई न कोई का संरक्षण लेना ही हैं। तो क्यों न भगवान के घर में जाके संरक्षण ले, समर्पित हो जाये। बाकी भाईयों के लिए किसी मुरली में नहीं बोला कि भाईयों को सरेण्डर होके रहना जरूरी है। उनको समर्पण करने की क्या दरकार? लेकिन कंस क्या करता हैं? ये जरासंधी क्या करते हैं? 80-85-86 राजाओं को जेल में ड़ाल देते हैं। वो विकारों की जेल में पड़े-पड़े सड़ते रहते हैं। उनकी बुद्धि में ज्ञान बैठ ही नहीं सकता। बाहर की दुनियाँ से महरूम कर देते हैं। क्या? जो जेल में आदमी पड़ा हुआ हो तो बाहर की दुनियाँ में क्या ज्ञान चल रहा हैं, कौन भगवान आया हुआ हैं उनको पता चलेगा? पता ही नहीं चलता। (**जिज्ञासु** – वो लोग बोलते हैं ज्ञानियों को ज्ञान नहीं सुनाना है बी-के ब्रहमाकुमारी सरेण्डर भाईयों को।).
बाबा - ये सारी यहाँ की बातें शास्त्रों में लिखी हुई हैं।
Baba: The body of the virgins and mothers itself is like this. In today's Iron Age world they need security. The womenfolk cannot be safe without the protection of a man in this world. If someone says: I will spend my life freely on a crossroad. Will she be able to spend [her life like that]? She cannot. So, virgins and mothers have to definitely dedicate their life. They have to definitely take someone or the other's protection. So, why not seek protection at God's home and why not surrender [herself]? As regards brothers, it has not been said in any Murli that it is necessary for the brothers to surrender [themselves]. Where is the need for them to surrender [themselves]? But what does *Kansa* do? What do these *Jarasindhis* do? He puts 80, 85, 86 kings into jail. They keep lying and rotting in the jail of vices. The knowledge cannot sit in their intellect at all. They separate them from the outside world. What? If a person is lying in a jail; will he know what kind of knowledge is being given in the outside world and which God has come? He does not know at all. (**Student:** Those people say: you should not narrate knowledge to the knowledgeable ones, the BKs, the surrendered brothers.)
Baba: All these are aspects of these times which have been written in the scriptures.

समयः 43.17-47.40
जिज्ञासुः बाबा, जो महाभारत में दिखाते हैं, पाण्डव और कौरव पांसा खेलते हैं और पांसा जो बाजी रखते हैं युधिष्टिर एक-एक हार जाते हैं और लास्ट में द्रौपदी को बाजी लगाते हैं। वो भी हार जाते हैं। इसका बेहद का अर्थ क्या है?
Time: 43.17-47.40

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, it has been shown in the Mahabharata that the Pandavas and Kauravas play the game of dice and they go on betting; *Yudhishthir* goes on losing everything one by one and in the last he puts (his wife) Draupadi at stake. He loses her as well. What does it mean in an unlimited sense?

बाबाः ये बेहद का जुआ है या हद का जुआ है? बेहद की गैंबलिंग है। ये बेहद की गैंबलिंग करने के लिए भगवान ने भी इशारा दे दिया। भगवान अभी ये जुआ पाण्डवों से खिलवा रहा हैं। क्या जुआ? सारा तन, धन, धाम, स्वहर्द परिवार सभी की बाजी लगा दो। बीबी, बाल, बच्चे सब इस यज्ञ में स्वाहा कर दो। मेरे नहीं हैं। किसके हैं? यज्ञपिता के। सोचना नहीं है इनका क्या हस्र होगा। जो होगा सो अच्छा होगा। तो महाभारत में यही तो दिखाते हैं। जो हुआ सो अच्छा हुआ या बुरा हुआ? अच्छा हुआ। ये सिर्फ नम्बर बनाने की युक्ति है। कौन कितना स्वाहा करता है। स्व माना अपना। जो अपनी चीज़ होती हैं जब निकाली जाती हैं तो हाय जेब में से निकल गयी। बच्चा हो, भाई हो जो अपने तरीके से चलने वाला हो और उसको स्वाहा कर दिया तो अंदर से हाय-हाय तो निकलती है। जब पांसे फेंके जाते हैं और पाण्डव लगातार हारते जाते हैं। तो अंदर से उनको धक्का तो लगता है।

Baba: Is it a game of dice in an unlimited sense or in a limited sense? It is gambling in an unlimited sense. Even God has given a hint to gamble in an unlimited sense. God is now making the Pandavas to play this game of dice. Which game of dice? Put the entire body, wealth, abode, family, etc. at stake. Sacrifice your wife, children [and] everyone in this *yagya*. [Think:] they do not belong to me. To whom do they belong? They belong to the *yagyapita*. You should not think what their fate will be? Whatever happens will be good. So, this is what has been shown in the Mahabharata. Whatever happened was good or was it bad? It was good. It is only a method to fix the numbers (*ranks*). Who sacrifices (*swaha*) to what extent? *Swa* means one's own. When someone takes out something belonging to him (he thinks): Oh no, this has come out from my pocket! He may be a child or a brother who follows our wishes and if we surrender him [to the Father], then, cries of despair emerge from within. When the game of dice is played and Pandavas go on losing continuously, then they do feel the shock from within.

अभी भी ये जुआ खेला जा रहा हैं। पाण्डव लगातार हार रहे हैं तन, धन, धाम, स्वहर्द परिवार की बाजी या जीत रहे हैं? कौरव लगातार जीत रहे हैं। अपनी बाजी अपनी मुट्ठी में रखते हैं। क्या? चालाकी करते हैं। चालाकी से जुआ खेलते हैं और पाण्डवों का सब अपने मुट्ठी में ले लेते हैं। जैसे सन् 76 में हुआ। 76 में क्या हुआ? जो सच्चे दिलवाले हैं पण्डा बाप के बच्चे थे उन्होंने तो अपना तन, धन, मन 76 में विनाश होना है तो सब अर्पण कर दिया। और जो चालक कौरव थे उन्होंने क्या किया? अपना तो अपने कन्ट्रोल में रखा ही किसी को नहीं दिया और जो पाण्डवों का था वो भी अपने मुट्ठी में ले लिया। ये जुआ अभी भी चल रहा हैं। बेसिक में हद में चल रहा था और अभी और ही बेहद में चल रहा है। इसलिए जो क्षत्रिय राजायें है उनमें ये परम्परा चली आ रही हैं अगर जुऐ का निमत्रंण मिले, युद्ध करने का कोई आवाहन करे चाहे वो जुऐ का युद्ध हो और चाहे वो स्थुल युद्ध हो मना नहीं नहीं करेंगे। आओ भाई। अब वो हद का जुआ तो है

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

नहीं बेहद की बात है। हद का कोई हिंसक युद्ध है नहीं। ये तो बेहद का ज्ञान और अज्ञान का युद्ध है।

Even now this game of dice is being played. Are the Pandavas continuously losing the body, wealth, abode, family that they have put at stake or are they winning it? The Kauravas are winning continuously. They keep their stake in their hands. What? They play a trick. They play the game of dice cleverly and take into their possession whatever belongs to Pandavas just as it had happened in the year (19)76. What happened in the year (19)76? Those with a true heart (*sachchey dilwaaley*), those who were the children of the Father *Panda* (guide) surrendered their body, wealth and mind thinking that destruction is going to take place in (19)76. And what did the clever Kauravas do? They kept their own belongings safely and they also usurped whatever belonged to the Pandavas. This game of dice is being played now. It was being played in the basic knowledge in a limited sense and now it is being played in an unlimited sense (in the advance knowledge). This is why this tradition is being followed among the *Kshatriya* kings; if they get an invitation to play a game of dice, if anybody welcomes them to fight a war, whether it is a war of the game of dice or whether it is a physical war, they will not deny. 'Come on brother.' Well, this is not that game of dice in a limited sense. It is in an unlimited sense. This is not a violent war in a limited sense. It is a war of knowledge and ignorance in an unlimited sense.

समयः 51.30-01.00.50

जिज्ञासुः बाबा, पाण्डव को तीन पैर पृथ्वी क्यों नहीं मिलता है?

बाबाः कोई भी प्राप्ति और कोई भी प्रकार की अप्राप्ति जीवन में होती हैं उसका मूल कारण क्या होता हैं? मान लो कौरवों को महल, माडियाँ, अटारियाँ राज्य वगैरा सबकुछ मिला और पाण्डवों को तीन पैर पृथ्वी नहीं मिली। कोई भी प्रकार की प्राप्ति हो जीवन में, कोई भी प्रकार की अप्राप्ति हो जीवन में इसका कारण क्या होता हैं? पूर्वजन्म के किये हुए कर्म। क्या? कर्म जो हैं वो प्राप्ति और अप्राप्ति कराते हैं। ये कर्म का उदय होता है। ब्राहमणों की संगमयुगी दुनियाँ में भी पूर्वजन्म में कोई ऐसे कर्म किये हैं। बड़े-बड़े राजायें हुए हिस्ट्री में। प्रजावर्ग की आत्मायें ज्यादा पाप करती थी या राजायें ज्यादा पाप करते थे?

जिज्ञासु – राजायें ज्यादा पाप करते थे।

Time: 51.30-01.00.50

Student: Baba, why don't Pandavas get three square feet of land?

Baba: What is the root cause of any kind of attainment or any kind of lack of attainment in life? Suppose, Kauravas got palaces, buildings, kingdom, etc. and the Pandavas did not get even three square feet of land. What is the reason for any kind of attainment or non-attainment in life? The actions performed in the past birth; what? Our karma brings attainments and non-attainments. This is the appearance of karma. Even in the Confluence Age world of Brahmins, they have performed such actions in the past birth. There have been great kings in the history. Did the souls of subject category commit more sins or did the kings commit more sins?

Student: The kings used to commit more sins.

बाबा – जो जितना बड़ा तबक्के वाला होगा उतना ज्यादा पाप करने वाला होगा। प्रभुता पाहि काहि मद नाहि। किसी को ऊँची कुर्सी मिलती है इस दुनियाँ में तो अहंकार जरूर पैदा होता हैं। तो ये जो 108 राजायें हैं, रूद्रमाला के मणके हैं ये सब नम्बरवार पाण्डवों की लिस्ट में हैं। पण्डा

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

पुत्र है। इन्होंने पूर्वजन्मों में जाने कितनों को अपने राज्य में से खदेड़ के बाहर कर दिया। उन्होंने भीख माँगी हमारे बाल-बच्चों के लिए रहने के लिए एक झोपड़ी की जगह तो दे दो और अहंकार में आकर के उनको नहीं दिया।

Baba: The higher the class one belongs to the more sins he commits. *Prabhuta paahi kahi mad nahi* (who does not become egotistic on getting power?) If someone gets a high position in this world he definitely becomes egotistic. So, these 108 kings, the beads of *Rudramala*, all are in the *number wise* list of Pandavas. They are children of Panda. Who knows how many people they banished from their kingdom in the past births? Those [people] begged them to give place for a hut for their wives and children to live in and they (the kings) did not give them out of ego.

जिज्ञासु – स्वदेशी राजायें ऐसा नहीं करेगा विदेशी राजा ही तो ऐसे करेगा।

बाबा – चाहे स्वदेशी राजायें हो, चाहे विदेशी राजायें हो। स्वदेशी ज्यादा पतित बने हैं या विदेशी ज्यादा पतित बने? ज्यादा तमोप्रधान स्वदेशी बने है या विदेशी बने हैं? ज्यादा पाप भारतवासियों ने कमाया हैं या विदेशियों ने कमाया हैं?

जिज्ञासु –भारतवासी।

बाबा- क्यों?

जिज्ञासु – क्योंकि वो बाद में आया।

बाबा – नहीं। जो जितना बड़े बाप का बच्चा होता है वो पाप करता है तो भी बड़े ते बड़ा पाप करता है और पुण्य करता है तो बड़े ते बड़ा पुण्य करने की ताकत रखता है। इसलिए द्वापरयुग से कलियुग अंत तक जितने भी बड़े-बड़े राजायें-महाराजायें हुए उन्होंने बड़े-बड़े पाप किये और वो सब यहाँ बैठे हुए हैं। पता नहीं कितनों को धक्के दिये होंगे राज्य में से। तो जिन-जिन को धक्के दिये हैं, सच्ची बात बोलने वाले होंगे तो भी उनको धक्का दिया। तो अभी ये लास्ट जन्म में हिसाब-किताब पूरा होना चाहिए कि नहीं चाहिए? होना चाहिए।

Student: *Swadeshi*[2] kings would not do like this; the *videshi*[3] king would do like this.

Baba: Whether they are *swadeshi* kings or *videshi* kings. Have the *swadeshis* become more sinful or have the *videshis* become more sinful? Have the *swadeshis* become more *tamopradhan* (dominated by darkness or ignorance) or have the *videshis* become more *tamopradhan*? Have the Indians (*Bharatvasis*) committed more sins or have the *videshis* committed more sins?

Student: The *Bharatwasis.*

Baba: Why?

Student: It is because they (*videshi*) came later on.

Baba: No. If someone is a child of a big personality, he commits the worst sins and if he performs a noble act, he has the capacity to perform the highest noble acts. This is why from the Copper Age to the end of the Iron Age, all the great kings and emperors have committed big sins and all of them are sitting here. Who knows how many people they would have banished from their kingdom? So, all those whom they banished, they banished even those who spoke the truth. So, should this karmic account be settled in this last birth or not? It should be.

[2] Of one's own country
[3] foreigner

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

तो जितने भी यहाँ बैठे हुए हैं सबको बेसिक ब्राहमणों की दुनियाँ से देश निकाला मिला है। कुछ थोड़े बहुत ऐसे हो जिनको देश निकाला न मिला हो। उससे साबित होता है उन्होंने अभी तक सेवा के फिल्ट में एड़वान्स में आये हुए बाप का परिचय ही नहीं दिया है। अगर वहाँ रहकर के परिचय देना उनके सामने शुरू करेंगे तो जरूर एक, दो, तीन कर देंगे।

All those who are sitting here have been banished from the world of basic Brahmins. There may be a few who have not been banished; it proves that they have not given the introduction of the Father who has come in advance (party) in the field of service. If they stay there and start giving the introduction in front of them, then they will definitely be driven out.

तो पाण्डवों ने ऐसा क्या किया जो उनको देश निकाला मिला, तीन पैर पृथ्वी नहीं मिली? और आगे भी कोई कहे कि बेसिक में तीन पैर पृथ्वी नहीं मिली लेकिन अभी एड़वान्स में तो बड़े-बड़े महल खड़े हुए हैं, ढ़ेर के ढ़ेर मिनी मधुबन बनते जा रहे हैं तो तीन पैर पृथ्वी तो क्या यहाँ तो महल, माडियाँ, अटारियाँ बन गई। उसका जवाब ये है कि अभी पाँच पाण्डव प्रत्यक्ष हो गये हैं या सिर्फ पाँच पाण्डवों का बाप पाण्डु प्रत्यक्ष हुआ है? पाण्डु प्रत्यक्ष हुआ है। अभी पाँच पाण्डव प्रत्यक्ष नहीं हुए हैं पूरे।

So, what did the Pandavas do that they were banished [and] they did not get three feet of land? Further, someone may say that they did not get three feet land in basic (knowledge), but now big palaces are standing in the advance (party), numerous *minimadhubans* are opening. So, not just three feet land, here palaces and buildings have been built. The answer for that is: have the five Pandavas been revealed now or has just Pandu, the Father of the five Pandavas been revealed? Pandu has been revealed. Now, all the five Pandavas have not been revealed completely.

जो बाप के जीवन में चले वो बच्चों के जीवन में भी चलना है। क्योंकि यहाँ नियम है बेगर टू प्रिन्स बनेंगे। जो यहाँ प्रिन्स बनेंगे वो राजा बनेंगे। प्रिन्स ही नहीं बनेंगे तो राजा भी नहीं बनेंगे। लेकिन प्रिन्स कब बनेंगे? जब बेगर बनेंगे। तन, धन, धाम, स्वहद, परिवार, सम्पर्की, सम्बन्धी सब की ताकत की बाजी लगायेंगे माना जुआ खेलेंगे। पत्नि, पत्नि नहीं, पति, पति नहीं, बच्चा, बच्चा नहीं, बेटी, बेटी नहीं, बाप, बाप नहीं। पूरी परीक्षा ली जायेगी। ऐसे नहीं एक बाप की ही परीक्षा होती है। जो बाप की परीक्षा वो बच्चों की भी परीक्षा होती हैं। इसलिए बोला कि बाप की इस समय ये हालत हैं कि भले मिनी मधुबन खुले हुए हैं मल्टी स्टोरी लेकिन बाप को तीन पैर पृथ्वी अभी भी स्वतंत्र रूप से नहीं मिली हुई हैं। एक ठिकाना जमाकर के नहीं रह सकता। रह सकता है क्या? नहीं रह सकता।

Whatever goes on in the life of the Father has to happen in the life of the children as well because there is a rule here: we will change from a beggar to a Prince. Those who become Prince here will become kings. If they do not become Prince at all, they will not become kings as well. But when will they become Prince? (It is) when they become beggars. When they will put at stake the power of their body, wealth, home, companions, family, contacts, relatives; i.e. they will play the game of dice. A wife will no more be a wife, a husband will no more be a husband, a child will no more be a child, a daughter will no more be a daughter, a father will no more be a father. . They will be completely tested. It is not that only the one Father is tested. Children will also have to face the same exam that the Father has faced. This is why it has been

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

said that the Father's condition at present is such that even though multistoried *Minimadhubans* are open at present the Father does not have an independent three feet land [for himself]. He cannot sit at one place comfortably. Can he? He cannot.

उसके लिए शास्त्रों में गायन है- कृष्ण भगवान भगवान तो थे। यहाँ भी लोग प्रश्न करते हैं - अरे, तुम्हारा भगवान है तो भागा-भागा क्यों फिरता है? तो तुरंत जवाब दे देना चाहिए अरे, कृष्ण भगवान कंस के ड़र से भागे-भागे फिरते थे कि नहीं गाँवड़ो-गाँवड़ो में? फिरते थे। तुम्हारे शंकर भगवान भस्मासुर के ड़र से सारी दुनियाँ में भागे-भागे फिरे कि नहीं फिरे? फिरे। तुम्हारे राम भगवान रावण के ड़र से काँटो के जंगल में मारे-मारे फिरे कि नहीं फिरे? फिरे। तो वही शूटिंग हो रही हैं ये कोई नई बात नहीं है। 5000 हजार साल पहले भी हुआ था और अभी भी, अभी हो रहा है। ऐसे नहीं पण्डा पाण्डु बाप के जीवन में ही ये होता है, जो पाण्डु के बच्चे पाँच पाण्डव हैं, थोड़े से ऊँगली पर गिने जाने योग्य, उनके जीवन में ये परिस्थितियाँ ये आवेंगी ही।

For that it is famous in the scriptures; Although God Krishna was God…. Even here, people raise a question: Arey, if he is your God, why does he keep running about? So, you should reply immediately, did God Krishna used to run from one village to the other in fear of Kansa or not? He used to run. Did your God Shankar run from all over the world fearing Bhasmasur or not? He did. Did your God Ram run from one place to the other in the jungle of thorns due to the fear of Ravan or not? He did. So, the same shooting is taking place now. This is not a new thing. It had happened 5000 years ago and it is happening even now. It is not so this takes place only in the life of the Father Pandu. These circumstances will certainly come in the life of Pandu's children, the five Pandavas, who can be counted on the finger tips.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info